ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 77-81

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गोंड जनजातीय समाज में संचार माध्यमों द्वारा कृषि सूचनाओं की पहुँच व उपयोग का अध्ययन (उत्तर बस्तर कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर ब्लाक के बोगर व विनायकपुर गांव के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 मीनाक्षी डड़सेना
शोध अध्येत्री– मास कम्युनिकेशन, धमतारी (छत्तीसगढ़) भारत

Received-01.08.2022, Revised-07.08.2022, Accepted-11.08.2022 E-mail:darsena.mini@gmail.com

सारांश:– *भारत की छवि एक कृषि प्रधान देश के रूप में चिन्हित है, भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि को का जीवन की धुरी व केंद्रबिंदु कहा जाता है। वर्तमान समय में कृषि व कृषि संबधित क्षेत्रों में देष की कुल श्रम शक्ति का 52 प्रतिशत भाग संलग्न होकर जीविकोपार्जन कर रहा है। वर्तमान आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत भाग आदिवासी समाज का का प्रतिनिधित्व करता है। कृषि कार्य आदिवासी सभ्यता व संस्कृति का एक अनिवार्य व अभिन्न अंग है। वर्तमान में संचार माध्यमों का सभी वर्ग व समाज पर विशेष प्रभाव है, संचार माध्यम समाज को विकास की नवीन प्रकियाओं से जोड़ने के साथ एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। संचार माध्यम जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो टेलीविजन व वर्तमान में इंटरनेट सूचनाओं व जानकारियों को चंद मिनटों में ही देश के किसी भी कोने में पहुँचा कर मैक्वेल की विश्व ग्राम अवधारणा को चरितार्थ कर रहे है। संचार का अपना विशेष महत्व प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। संचार विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है, संचार प्रक्रिया के बिना हम विकास की कल्पना नही कर सकते।*

प्रस्तुत अध्ययन में चयनित जनजातीय क्षेत्र में संचार माध्यमों द्वारा कृषि सूचनाओं जानकारियों की पहुँच व प्रयोग के बारे में संकल्पना की गई है तथा शोध अध्ययन को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। उददेश्य की पूर्ति हेतु चयनित क्षेत्र में गोंड जनजातीय समूह को न्यादर्श के रूप में लिया गया है व अनुसूची के माध्यम से उनसे आँकड़े एकत्रित किए गए। प्राप्त समंको का प्रतिशतीय विश्लेषण करके निष्कर्ष निरूपित किए गए।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय अर्थ व्यवस्था, जीवन की धुरी, केन्द्र बिन्दु, जीविकोपार्जन, आदिवादी समाज, अवधारणा ,चरितार्थ।

भूमिका– 'भारत की आत्मा गाँवों में बसती है व गाँवों के विकास के बिना भारत के विकास की कल्पना संभव नहीं है'।

महात्मा गांधी– वर्तमान में देश की दो तिहाई से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिसकी रोजी–रोटी का प्रमुख साधन खेतीबाड़ी व पशुपालन है। प्राचीन समय से ही कृषि संस्कृति, ऋषि संस्कृति व वन्य संस्कृति के लिए प्रसिद्ध छतीसगढ़ का प्रमुख आदिवासी क्षेत्र बस्तर पूर्णताः वनाच्छादित व ग्रामीण संस्कृति से परिपूर्ण है। राज्य के कुल जनसंख्या की 30.26 प्रतिशत आबादी जनजातीय जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है। बस्तर संभाग में 23 जनजातियाँ निवास करती है, जिनमें से गोंड एक प्रमुख जनजाति है व इनके जीविकोंपार्जन का मुख्य साधन कृषि व वनोपज संकलन है। गोंड जनजाति पारंपरिक रूप से दहिया खेती करते थे, लेकिन चयनित क्षेत्र में कृषि की यह पद्वति लगभग विलुप्त हो चुकी है पारंपरिक रूप से खेती में अब धान व मक्का की खेती ही प्रमुख है, लेकिन वर्तमान में कृषि के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों व कृषि के आधुनिक स्वरूप को संचार माध्यमों ने ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र हर गांव हर चौपाल तक बड़ें ही तेज गति से प्रसारित किया है। कृषि संबधी सूचना व जानकारियों के प्रसार में संचार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। रेडियो व टेलीविजन में प्रसारित होने वाले कृषि विषयक कार्यक्रमों ने आदिवासी क्षेत्र में होने वाली पारंपरिक कृषि को आधुनिक कृषि में परिवर्तित करने में अहम भूमिका निभाई है, जिससे उनके जीवन में गति आयी व विकास के रास्ते खुले।

साहित्य पुनरावलोकन– मन्चा श्रीहरि (2012) द्वारा आंध्रप्रदेश के खम्मन जिले में जनजातियों के कृषि विकास में मीडिया की भूमिका विषय पर किए अपने शोध में पाया कि इस क्षेत्र के जनजातीय समाज में कृषि विकास की गति धीमी है, मीडिया के प्रति लोगों में जागरूता नहीं है। कृषि जानकारियों के संचार माध्यमों द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रचारित व प्रसारित करने की आवश्यकता है, सरकार भी संचार के क्षेत्र में कमी को दूर करे।

मजूमदार(1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि पहाड़ी जनजाति गारो कृषि संबधी तकनीकी जानकारियों की पहुँच से काफी दूर है, क्योंकि जानकारियों के प्रसार करने वाले माध्यमों की पहुँच यहाँ पर ठीक से नहीं है। क्षेत्र की सुगमता को इसका प्रमुख कारण उन्होनें माना।

अध्ययन का उद्देष्य– शोध विषय के आधार पर अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. चयनित क्षेत्र में संचार के माध्यमों द्वारा कृषि संबधी जानकारियों की पहुँच का अध्ययन करना।
2. चयनित क्षेत्र में संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित कृषि जानकारियों के कृषकों द्वारा प्रयोग संबधी अध्ययन करना।

शोध विधि– अनुसंधान के लिए चयनित विषय के महत्व को देखते हुए सर्वेक्षण विधि उपयुक्त है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध उददेश्य के आधार पर समस्या का समाधान करने व आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गया है।

न्यादर्ष विधि– शोध समस्या हेतु उत्तर बस्तर कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर ब्लाक के बोगर (जनसंख्या 1430, साक्षरता दर 64.3 प्रतिशत) व विनायकपुर (जनसंख्या 586, साक्षरता दर 53.58 प्रतिशत) गाँव के गोंड जनजाति के कृषकों का उत्तरदाता के रूप में चयन सरल दैव निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है। 5 महिला उत्तरदाता व 15 की संख्या में पुरूशों का चयन किया गया है।

उपकरण– प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित अनुसूची का निर्माण व प्रशासन अध्ययन क्षेत्र में जाकर किया गया, जिसका मानकीकरण शोधार्थी द्वारा किया गया।

विष्लेशण एवं व्याख्या –

प्रस्तुत शोध कार्य कृशि कार्य से संबधित प्रश्नों का विश्लेषण

प्र0.1 सूचना प्राप्ति के लिए कौन सा माध्यम उपयोग करतें हैं?

तालिका क्रमांक – 1

क्रं.	सूचना प्राप्ति के माध्यम	संख्या	प्रतिशत
1	टेलीविजन	18	90
2	रेडियो	0	0
3	समाचार पत्र	2	10
4	अन्य कोई	0	0

आरेख क्रमांक – 1

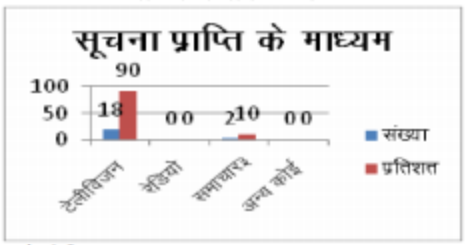

व्याख्या– कुल 20 उत्तरदाताओं में 90: उत्तरदाता सूचना प्राप्ति के लिए टेलीविजन व 10: उत्तरदाता समाचार पत्र का प्रयोग करते हैं।

प्र0. 2 कृषि संबधी जानकारी के लिए कौन सा माध्यम उपयोग करते है?

तालिका क्रमांक – 2

क्र.	कृषि संबधी जानकारी प्राप्ति के माध्यम	संख्या	प्रतिशत
1	टेलीविजन	3	15
2	रेडियो	0	0
3	समाचार पत्र	0	0
4	अन्य कोई (आर.इ.ओ)	20	100

आरेख क्रमांक – 2

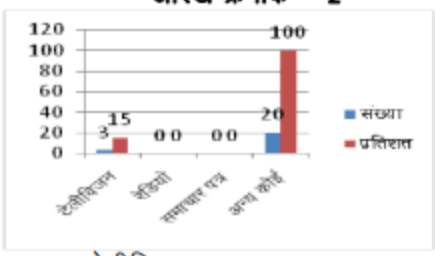

व्याख्या–कृषि सूचनाओं की प्राप्ति के लिए 20 उत्तरदाताओं में से 15: उत्तरदाता टेलीविजन व 100: उत्तरदाता अन्य माध्यम (कृषि विस्तार अधिकारी द्वारा प्राप्त जानकारी) का प्रयोग करते हैं ।

प्र0. 3 किस प्रकार की खेती आप करते हैं?

तालिका क्रमांक – 3

क्रं.	खेती के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	पारंपरिक खेती	17	85
2	आधुनिक खेती	3	15

आरेख क्रमांक –3

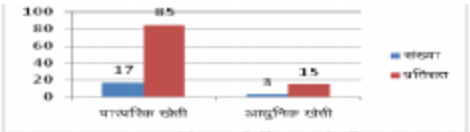

व्याख्या– 20 उत्तरदाताओं में 85: कृषक पारंपरिक खेती (धान,मक्का) व 15: कृषक आधुनेक खेती करते हैं।

प्र0.4 कृषि विषयक किन जानकारियों का प्रयोग आप करते हैं–

तालिका क्रमांक – 4

क्रं.	कृषि जानकारियां	संख्या	प्रतिशत
1	फसल की बोआई व रोपाई	5	25
2	उर्वरक व कीटनाषक प्रबंधन	6	30
3	फसल भंडारण व रखरखाव	0	0
4	कृषि संबधी योजनाएँ	9	45

आरेख क्रमांक – 4

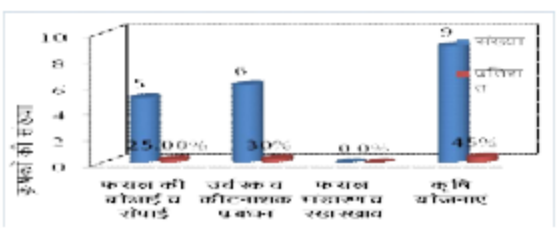

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

व्याख्या– उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में 25: उत्तरदाता फसलों की बोवाइ व रोपाई संबधी जानकारी का प्रयोग कृशि कार्य में करतें है ,30 : उत्तरदाता उर्वरक व कीटनाशक संबधी प्रसारित जानकारियों को प्रयोग में लाते हैं साथ ही 45: उत्तरदाता ने कहा कि वे कषशि संबधी योजनाओं के बारे में जानकारी मिलने पर उनका लाभ लेने प्रयास करते हैं।

प्र0 5 प्राप्त कृषि जानकारियों का उपयोग क्या आप कृषि कार्य में करते हैं?

तालिका कमांक – 5

कं.	कृषि जानकारीयों का उपयोग	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	5	25
2	नहीं	10	50
3	कह नहीं सकते	0	0

आरेख कमांक – 5

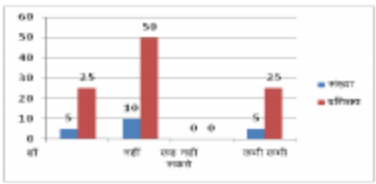

व्याख्या– उत्तरदाताओं में से 25: उत्तरदाता संचार माध्यम व कृषि विस्तार अधिकारी द्वारा प्राप्त कृषि जानकारी का प्रयोग अपने कृषि कार्य में करते हैं व 25: कृषक कभी–कभी ही इन जानकारियों का प्रयोग अपने कृषि कार्य में करते हैं जबकि 50: उत्तरदाता प्रयोग नहीं करते हैं।

प्र.6 संचार माध्यमों से प्राप्त कृषि जानकारियाँ कृषि कार्य के लिए उपयोगी है?

तालिका कमांक – 6

कं.	संचार माध्यमों से प्राप्त कृषि	संख्या	प्रतिशत
1	जानकारियाँ कृषि हाँ	17	95
2	नहीं	0	0
3	कह नहीं सकते	0	
4	कभी–कभी	3	15

आरेख कमांक – 6

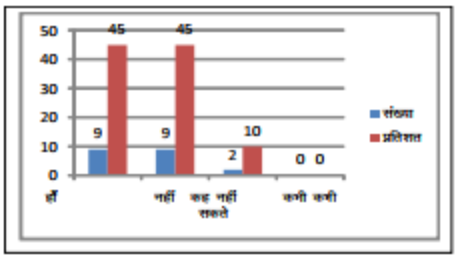

व्याख्या– प्राप्त कृषि जानकारियाँ उपयोगी रहती है, के जवाब में 20 में से 95: कृषकों ने कहा हाँ वहीं 15 :कृषकों का जवाब नहीं था।

प्र.7 कृषि संबधी जानकारियाँ उचित व सही समय पर मिल पाती है?

तालिका कमांक – 7

कं.	कृषि संबधी जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	9	45
2	नहीं	9	45
3	कह नहीं सकते	2	10
4	कभी–कभी	0	0

आरेख कमांक – 7

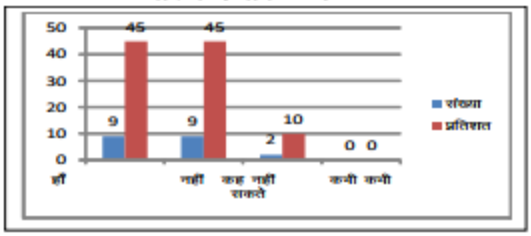

व्याख्या– कुल उत्तरदाताओं में से 45: उत्तरदाताओं ने कहा कि कृषि की जानकारियाँ उन्हें सही समय पर प्राप्त हो जाती है तो वहीं 45: उत्तरदाताओं का कहना था कि जानकारी उचित समय पर नहीं मिल पाती व 10: उत्तरदाताओं ने कह नहीं सकते यह जवाब प्रेषित किया।

प्र.8 कृषि जानकारियों को समझने में क्या किसी प्रकार की समस्या आती है? यदि हाँ तो

तालिका कमांक – 8

क्रं.	संचार बाधा	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	11	55
2	नहीं	9	45

आरेख क्रमांक – 8

व्याख्या– उपरोक्त प्रश्न जिसमें कृषि जानकारियों को समझने में क्या समस्या होती है के जवाब में 55: उत्तरदाताओं ने कहा कि हाँ तो 45: उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें जानकारियों को समझने में कोई समस्या नहीं आती, हाँ जवाब वाले उत्तरदाताओं से पूछने पर कि किस प्रकार की समस्या आती है का जवाब था भाषा व तकनीकी संबधी समस्या।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

निष्कर्ष एवं व्याख्या– चयनित विषय के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि चयनित क्षेत्र ग्राम बोगर व विनायकपुर जो गोंड जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है वहाँ पर सूचना प्राप्ति व मनोरंजन के लिए टेलीविजन का प्रयोग सबसे ज्यादा 90: किया जाता है व समाचार पत्र सूचना प्राप्ति के लिए द्वितीयक माध्यम के रूप में 10: पाया गया। रेडियो की उपस्थिति शून्य रही।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि जानकारियों को प्राप्त करने के लिए 15 प्रतिशत लोग टेलीविजन पर प्रसारित कृषि कार्यक्रम देखते हैं व 100 प्रतिशत लोग क्षेत्र के कृषि विस्तार अधिकारी पर निर्भर रहते हैं, इसमें 6 कृषि कार्यक्रम देखने वाले कृषक भी शामिल है।

उत्तरदाताओं से पूछने पर कि आप किस प्रकार की खेती करते हैं, 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे पारंपरिक (धान, मक्का) की खेती ही करते हैं जबकि 15 प्रतिशत ने कहा कि वे धान व मक्के के साथ–साथ सब्जी व अन्य फसल अर्थात् आधुनिक खेती भी करते है। कृषि के नवाचारों के प्रति क्षेत्र के लोगों में जागरूकता बहुत ही कम पायी गयी।

प्राप्त कृषि जानकारियां उपयोगी है या नहीं, इस प्रश्न की अनुक्रिया के रूप में 95 प्रतिशत कृषकों ने माना कि ये जानकारियां उपयोगी हैं जबकि 15 प्रतिशत मानना था कि कभी–कभी ही उपयोगी रहती हैं।

कृषि जानकारियाँ क्या उचित समय पर मिल पाती हैं, इस प्रश्न के पूछे जाने पर पर 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ कहा, 45 प्रतिशत ने नहीं व 10 प्रतिशत ने कहा कि कभी–कभी ही उचित समय पर जानकारी मिल पाती है।

कृषि संबधी किन–किन जानकारियों का प्रयोग कृषि कार्य में करते हैं, के जवाब में 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि फसल बोवाई व रोपाई संबधी जानकारी का प्रयोग कभी कभी कर लेते हैं वहीं 30 प्रतिशति उत्तरदाता ही उर्वरक व किटनाशकों संबधी जानकारी का व शेष उत्तरदाता इस विषय पर प्राप्त जानकारी के आधार रासायनिका उर्वरकों का प्रयोग न करके स्वयं के अनुभव से करते है क्योंकि वे फसल उत्पादन पारिवारिक प्रयोग के लिए ही करते हैं। इस वजह से वे किटनाशकों व जहरिले रसायनों से दूरी रखते हैं। फसल भंडारण भी अपनी व्यवस्था अनुसार ही करते हैं। कृषि संबधी सरकारी योजनाओं का लाभ 90 प्रतिशत कृषक ही उठा पाने का प्रयास करते हैं।

टेलीविजन या कृषि विस्तार अधिकारी द्वारा प्राप्त कृषि जानकारियों का प्रयोग क्या अपने कृषि कार्य में करते हैं के प्रश्न पर 5 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे प्रयोग करते हैं, 10 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे प्रयोग नहीं करते हैं तथा 5 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे कभी–कभी ही प्रयोग करते हैं। नहीं प्रयोग करने वाले कृषकों से जब यह पूछा गया कि वे क्यों प्रयोग नहीं करते तो यह बातें सामनें आई कि वे कृषि नवाचारों, नए प्रयोगों को अपनाकर फसल उत्पादन में परिवर्तन का जोखिम नहीं उठाना चाहते क्योंकि यह क्षेत्र पूर्ण रूप से एक फसलीय है व यही उनके जीवनयापन का साधन है। नवाचारों के प्रति जागरूकता की कमी देखी गई।

कृषि जानकारियों को समझने में क्या आपको कोई समस्या होती है इस प्रश्न पर 55 प्रतिशत कृषकों का जवाब हाँ रहा व 45 प्रतिशत कृषकों ने कहा कि किसी प्रकार की समस्या नहीं होती। 55 प्रतिशत वर्ग से पुछने पर कि किस प्रकार कि समस्या आती है तो उनसे भाषा व तकनीकी संबधी समस्या जवाब के रूप में प्राप्त हुआ। टेलीविजन पर कृषि जानकारी प्रसार में समस्या के संदर्भ में कृषकों ने बताया कभी कभी कृषि के संबध में तकनीकी जानकारियों के प्रयोग पर प्रस्तुत शब्दावली समझने में आसान नहीं होती

उपसंहार– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बहुत ही चौंकानें वाले तथ्य सामनें आए जैसे कि अध्ययन क्षेत्र में संचार के माध्यमों में टेलीविजन एकमात्र माध्यम की पहुँच है जबकि सरकारी आँकड़े सर्वथा इसके विपरित हैं जोकि यह प्रदर्शित करते हैं कि रेडियो की पहुँच देश के 99 प्रतिशत क्षेत्रों में है लेकिन इस अध्ययन क्षेत्र में रेडियो की पहुँच शून्य पायी गयी वहीं औसत 60.4 प्रतिशत साक्षरता दर होने के बाद भी समाचार पत्रों की उपस्थिति बहुत ही कम है व कृषि नवाचारों को अपनानें के प्रति जागरूकता नहीं के बराबर है।

कृषि संबधी जानकारियों के लिए क्षेत्र के लोग अपने अनुभव व कृषि विस्तार अधिकारी पर ही निर्भर हैं तथा संचार माध्यमों का इस क्षेत्र पर प्रभाव बहुत ही कम है। संचार माध्यमों से प्रसारित जानकारी के प्रति विश्वसनीयता नगण्य नजर आई।उचित समय पर जानकारी मिलती है या नहीं पर उत्तदाताओं ने बताया कि एक कृषि विस्तारक अधिकारी के अधीन 8 से 10 गांव होते हैं इस स्थिति में समय पर इच्छित जानकारी मिल पाए यह संभव नहीं हो पाता।

प्राप्त कृषि जानकारी उपयोगी है, यह मानते हुए भी मात्र 5 प्रतिशत लोग ही इसका प्रयोग कर रहे हैं। कृषि संबधी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने वाले उतरदाताओं की संख्या भी कम है इसका जवाब सरकारी विभागों की उदासीनता के रूप में सामने आया। उत्तरदाताओं ने कहा कि सरकारी योजनाएँ कागजों पर ही अंकित है वास्तविक कियान्वयन आधा अधूरा ही हो पाता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

अध्ययन क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि क्षेत्र में कृषि जानकारियों के प्रसार में अंतरवैयक्ति संचार सबसे प्रभावशाली है क्यों कि क्षेत्र के कृषकों ने आपस में साझा किए गए कृषि जानकारियों के प्रयोग पर विश्वसनीयता प्रकट किए, स्वयं के अनुभवों को साझा कर व कृषि विस्तार अधिकारीयों से प्राप्त कृषि जानकारी का प्रयोग ही सामने आया। संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित कृषि जानकारियों का प्रत्यक्ष प्रभाव इस क्षेत्र में नगण्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भगत.एल.एन (1983) न्यू टेक्नालाजी एंड एग्रीकल्चर डेवलेपमेंट इन ट्राइबल एरिया, अरूणा प्रिटिंग प्रेस।
2. कांबले, राजू (2017) द इम्पेक्ट ऑफ मास मीडिया एंड द रोल आफ वुमन इन एग्रीकल्चर, कम्यूनिकेशन टुडे।
3. मन्चा, श्रीहरि (2012) रोल आफ मीडिया इन ट्राइबल एग्रीकल्चर डेवलेपमेंट, इंटरनेशनल जरनल ऑफ सोशल साइंस।
4. छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातियों की सांख्यिकी जानकारी, 2011.
5. भाग्यलक्ष्मी,जे(2004)ग्रामीण महिलाओं को संचार आवश्यकताओं की पूर्ति,योजना जनवरी 2012.
6. यादव,चंद्रेश्वर (2013)जनजातियों में सूचना तंत्र एक अध्ययन ,मीडिया टुडे।
7. शुक्ला,अनिल(2018) बस्तर के लोक माध्यम कम्यूनिकेशन टुडे।
8. पटेल,हरिराम (2020) छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन,एच.आर. पब्लिकेशन।

*****